इक्कीसवाँ अध्याय

श्रीपराशर उवाच

संह्लादपुत्र आयुष्माञ्छिविर्बाष्कल एव च। विरोचनस्तु प्राह्लादिर्बलिर्जज्ञे विरोचनात् ॥१॥
बलेः पुत्रशतं त्वासीद्बाणज्येष्ठं महामुने। हिरण्याक्षसुताश्चासन्सर्व एव महाबलाः ॥२॥
उत्करः शकुनिश्चैव भूतसन्तापनस्तथा। महानाभो महाबाहुः कालनाभस्तथापरः ॥३॥
अभवन्दनुपुत्राश्च द्विमूर्द्धा शम्बरस्तथा। अयोमुखः शङ्कुशिराः कपिलः शङ्करस्तथा ॥४॥
एकचक्रो महाबाहुस्तारकश्च महाबलः। स्वर्भानुर्वृषपर्वा च पुलोमश्च महाबलः ॥५॥
एते दनोः सुताः ख्याता विप्रचित्तिश्च वीर्यवान् ॥६॥
स्वर्भानोस्तु प्रभा कन्या शर्मिष्ठा वार्षपर्वणी। उपदानी हयशिराः प्रख्याता वरकन्यकाः ॥७॥
वैश्वानरसुते चोभे पुलोमा कालका तथा। उभे सुते महाभागे मारीचेस्तु परिग्रहः ॥८॥
ताभ्यां पुत्रसहस्राणि षष्टिर्दानवसत्तमाः। पौलोमाः कालकेयाश्च मारीचतनयाः स्मृताः ॥९॥
ततोऽपरे महावीर्या दारुणास्त्वतिनिर्घृणाः। सिंहिकायामथोत्पन्ना विप्रचित्तेः सुतास्तथा ॥१०॥
व्यंशः शल्यश्च बलवान् नभश्चैव महाबलः। वातापी नमुचिश्चैव इल्वलः खसृमस्तथा ॥११॥
अन्धको नरकश्चैव कालनाभस्तथैव च। स्वर्भानुश्च महावीर्यो वक्त्रयोधी महासुरः ॥१२॥
एते वै दानवाः श्रेष्ठा दनुवंशविवर्द्धनाः। एतेषां पुत्रपौत्राश्च शतशोऽथ सहस्रशः ॥१३॥
प्रह्लादस्य तु दैत्यस्य निवातकवचाः कुले। समुत्पन्नाः सुमहता तपसा भावितात्मनः ॥१४॥
षट् सुताः सुमहासत्त्वास्ताम्राया: परिकीर्त्तिताः। शुकी श्येनी च भासी च सुग्रीवीशुचिगृद्ध्रिकाः ॥१५॥
शुकी शुकानजनयदुलूकप्रत्युंलूकिकान्। श्येनी श्येनांस्तथा भासी भासान्गृद्ध्रांश्च गृध्यपि ॥१६॥

कश्यप महर्षि की अन्य स्त्रियों के वंश तथा मरुद्गण की उत्पत्ति

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— प्रह्लाद के पुत्र आयुष्मान्, शिवि और वाष्कल थे। प्रह्लाद के पुत्र विरोचन हुए और विरोचन के पुत्र बलि हुए ॥१॥ बलि के सौ पुत्र थे उनमें बाण सबसे श्रेष्ठ था। हिरण्याक्ष के सभी पुत्र महाबलवान् थे। उनके नाम उत्कर, शकुनि, भूतसन्तापन, महानाभ, महाबाहु और कालनाभ थे ॥२-३॥ कश्यप महर्षि की दनु नाम की पत्नी के पुत्र द्विमूर्धा, शम्बर, अयोमुख, शङ्कुशिरा, कपिल, शङ्कर, एकचक, महाबाहु, तारक, महाबल, स्वर्भानु, वृषपर्वा, महाबली पुलोम तथा पराक्रमी विप्रचित्ति थे। ये सभी दनु के पुत्र प्रख्यात थे ॥४-६॥ स्वर्भानु की पुत्री प्रभा थी और वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा, उपदानी तथा हयशिरा थीं। ये वृषपर्वा की तीन कन्यायें विख्यात थीं ॥७॥ वैश्वानर की दो पुत्रियाँ थी पुलोमा तथा कालका। ये दोनों कन्यायें मरीचि महर्षि के पुत्र कश्यप महर्षि की पत्नियाँ हुयीं ॥८॥ उन दोनों के पुत्र साठ हजार श्रेष्ठ दानव हुए। कश्यपजी के ये सभी पुत्र पौलोम तथा कालकेय कहलाये ॥९॥ इनसे अतिरिक्त विप्रचित्ति के सिंहिका के गर्भ से और भी पुत्र उत्पन्न हुए जो महाबलवान्, भयङ्कर तथ क्रूर थे ॥१०॥ उनके नाम हैं— व्यंश, शल्य, बलवान् नभ, महाबलवान् वातापी, नमुचि, इल्वल, खसृम, अन्धक, नरक, कालनाभ, स्वर्भानु तथा महाबलवान् वक्त्रयोधी ॥११-१२॥ ये सभी श्रेष्ठ दानव दनु के वंश को बढ़ाने वाले थे। इन सबों के सैकड़ों तथा हजारों पुत्र एवं पौत्र हुए ॥१३॥ आत्मज्ञानी दैत्यराज प्रह्लाद के वंश में बहुत बड़ा तपस्या से निवातकवच नामक दैत्य उत्पन्न हुआ ॥१४॥ कश्यप महर्षि की ताम्रा नामक पत्नी की

शुच्यौदकान्पक्षिगणान्सुग्रीवी तु व्यजायत । अश्वानुष्ट्रान्गर्दभांश्च ताम्रावंशः प्रकीर्त्तितः ॥१७॥
विनतायास्तु द्वौ पुत्रौ विख्यातौ गरुडारुणौ । सुपर्णः पततां श्रेष्ठो दारुणः पन्नगाशनः ॥१८॥
सुरसायां सहस्रं तु सर्पाणाममितौजसाम् । अनेकशिरसां ब्रह्मन् खेचराणां महात्मनाम् ॥१९॥
काद्रवेयास्तु बलिनः सहस्रममितौजसः । सुपर्णवशगा ब्रह्मन् जज्ञिरे नैकमस्तकाः ॥२०॥
तेषां प्रधानभूतास्तु शेषवासुकितक्षकाः । शंखेङ्खश्वेतो महापद्मः कम्बलाश्वतरौ तथा ॥२१॥
एलापुत्रस्तथा नागः कर्कोटकधनञ्जयौ । एते चान्ये च बहवो दन्दशूका विषोल्बणाः ॥२२॥
गणं क्रोधवशं विद्धि तस्याः सर्वे च दंष्ट्रिणः । स्थलजाः पक्षिणोऽब्जाश्च दारुणाः पिशिताशनाः ॥२३॥
क्रोधा तु जनयामास पिशाचांश्च महाबलान् । गास्तु वै जनयामास सुरभिर्महिषांस्तथा ।
इरावृक्षलतावल्लीस्तृणजातीश्च सर्वशः ॥२४॥
खसा तु यक्षरक्षांसि मुनिरप्सरसस्तथा । अरिष्टा तु महासत्त्वान् गन्धर्वान्समजीजनत् ॥२५॥
एते कश्यपदायादाः कीर्त्तिताः स्थाणुजङ्गमाः । तेषां पुत्राश्च पौत्राश्च शतशोऽथ सहस्रशः ॥२६॥
एष मन्वन्तरे सर्गो ब्रह्मन्स्वारोचिषे स्मृतः ॥२७॥
वैवस्वते च महति वारुणे वितते कृतौ । जुह्वानस्य ब्रह्मणो वै प्रजासर्ग इहोच्यते ॥२८॥
पूर्वं यत्र तु सप्तर्षीनुत्पन्नान्सप्तमानसान् । पितृत्वे कल्पयामास स्वयमेव पितामहः ।
गन्धर्वभोगिदेवानां दानवानां च सत्तम ॥२९॥

छह अत्यन्त प्रभावयुक्त पुत्रियाँ उत्पन्न हुयीं शुकी, श्येनी, भासी, सुग्रीवी, शुचि और गृद्धिका ॥१५॥ शुकी से शुक उल्लूक तथा ऊलुओं के विरोधी काक उत्पन्न हुए । श्येनी ने श्येनों (बाजपक्षियों) को उत्पन्न किया । भासी से भास तथा गृद्धिका से गृद्ध उत्पन्न हुए ॥१६॥ शुचि ने जल के पक्षि समूहों को उत्पन्न किया सुग्रीवी ने अश्वों, ऊँटों और गर्दभों को उत्पन्न किया इस तरह ताम्रा का वंश वर्णित हुआ ॥१७॥ कश्यप महर्षि की पत्नी विनता के दो प्रख्यात पुत्र हुए; गरुड और अरुण । उनमें गरुड अत्यन्त भयङ्कर और सर्पों को खाने वाले थे ॥१८॥ हे ब्रह्मन् ! सुरसा के पुत्र अनेक सर्प हुए जो बड़े ही प्रभावशाली अनेक शिरों वाले, और आकाश में विचरने वाले थे ॥१९॥ क्रदू के भी पुत्र महाबलवान, अत्यधिक पराक्रमी तथा अनेक शिरों वाले थे । ये सभी गरुड के वशवर्ती थे ॥२०॥ उन सबों में प्रधान शेष, वासुकि और तक्षक, शंखश्वेत, महापद्म, कम्बल तथा अश्वतर थे ॥२१॥ एला के पुत्र नाग, कर्कोटक और धनञ्जय थे, इन सबों के अतिरिक्त बहुत से काटने वाले विषैले सर्प थे ॥२२॥ क्रोधवशा के पुत्रों को क्रोधवश गण जानो, ये सभी दाँत वाले, पृथिवी पर उत्पन्न होने वाले मांस खाने वाले तथा भयङ्कर जलचर और पृथिवी पर उत्पन्न होने वाले पक्षीगण हुए ॥२३॥ क्रोधा ने महाबलवान् पिशाचों को उत्पन्न किया । सुरभि ने गौर और महिषों को उत्पन्न किया । इरा ने वृक्षों, लताओं तथा समस्त तृणों को उत्पन्न किया ॥२४॥ खसा ने यक्षों और राक्षसों को उत्पन्न किया । मुनि ने अप्सराओं को उत्पन्न किया । अरिष्टा ने महाबलवान् गन्धर्वों को उत्पन्न किया ॥२५॥ इस तरह कश्यप महर्षि के स्थावर एवं जङ्गम सन्तानों का वर्णन किया गया । उन सबों के सैकड़ों और हजारों पुत्र एवं पौत्र उत्पन्न हुए ॥२६॥ हे ब्रह्मन् ! यह, स्वारोचिष् मन्वन्तर की सृष्टि का वर्णन किया गया ॥२७॥ वैवश्वत मन्वन्तर के प्रारम्भ से महान् वारुण यज्ञ प्रारम्भ हुआ, उसमें ब्रह्माजी होता थे । अब मैं उनकी प्रजा का वर्णन करता हूँ ॥२८॥ पहले मन्वन्तर में जो सप्तर्षि ब्रह्माजी के मानस पुत्र थे उनकी ही ब्रह्माजी ने इस कल्प में गन्धर्वों, सर्पों, देवताओं तथा दानवों के पिता रूप से कल्पना की ॥२९॥ जिसके पुत्र विनष्ट हो गये थे उन दितिदेवी ने महर्षि कश्यप को

दितिर्विनष्टपुत्रा वै तोषयामास काश्यपम्। तया चाराधितः सम्यक्काश्यपस्तपतां वरः ॥३०॥
वरेणच्छन्दयामास सा च वव्रे ततो वरम्। पुत्रमिन्द्रवधार्थाय समर्थममितौजसम्॥३१॥
स च तस्मै वरं प्रादाद्भार्यायै मुनिसत्तमः। दत्त्वा च वरमत्युग्रं कश्यपस्तामुवाच ह ॥३२॥
शक्रं पुत्रो निहन्ता ते यदि गर्भं शरच्छतम्। समाहितातिप्रयता शैचिनी धारयिष्यसि ॥३३॥
इत्येवमुक्त्वा तां देवीं सङ्गतः कश्यपो मुनिः। दधार सा च तं गर्भं सम्यक्छौचसमन्विता ॥३४॥
गर्भमात्मवधार्थाय ज्ञात्वा तं मघवानपि। शुश्रूषुस्तामथागच्छद्विनयादमराधिपः ॥३५॥
तस्याश्चैवान्तरप्रेप्सुरतिष्ठत्पाकशासनः। ऊने वर्षशते चास्या ददर्शान्तरमात्मना ॥३६॥
अकृत्वा पादयोः शैचं दितिः शयनमाविशत्। निद्रा चाहारयामास तस्या कुक्षिं प्रविश्य सः ॥३७॥
वज्रपाणिर्महागर्भं चिच्छेदाथ स सप्तधा। सम्पीड्यमानो वज्रेण स रुरोदातिदारुणम् ॥३८॥
मा रोदीरिति तं शक्रः पुनः पुनरभाषत। सोऽभवत्सप्तधा गर्भस्तमिन्द्रः कुपितः पुनः ॥३९॥
एकैकं सप्तधा चक्रे वज्रेणारिविदारिणा। मरुतो नाम देवास्ते बभूवुरतिवेगिनः ॥४०॥
यदुक्तं वै भगवता तेनैव मरुतोऽभवन्। देवा एकोनपञ्चाशत्सहाया वज्रपाणिनः ॥४१॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे प्रथमेंऽशे एकविंशोऽध्यायः ॥२१॥

प्रसन्न किया। दिति के द्वारा सेवित कश्यप महर्षि ने प्रसन्न होकर दिति से वरदान माँगने के लिए कहा। उस समय दिति ने ऐसे पुत्र का वरदान माँगा जो इन्द्र का वध करने में समर्थ तथा अमित पराक्रमी हो ॥३०-३१॥ मुनियों में श्रेष्ठ कश्यप महर्षि ने दिति को वह उग्र वरदान दे दिया और दिति से कहा ॥३२॥ तुम्हारा पुत्र तब ही इन्द्र को मारने वाला होगा जब तुम भगवान् के ध्यान में संलङ्गन रहकर पावित्र्य का पालन करती हुई उस गर्भ को सौ वर्ष तक धारण करोगी ॥३३॥ इस तरह कहकर महर्षि कश्यप ने दिति के साथ संगमन किया और दिति ने भी अच्छी तरह से पावित्र्य का पालन करते हुए उस गर्भ को धारण किया ॥३४॥ इन्द्र ने भी जब जाना कि वह गर्भ इन्द्र को मारने वाला है तो वे भी अत्यन्त नम्रता पूर्वक दिति की सेवा करने की इच्छा से उसके पास गये ॥३५॥ वहाँ पर इन्द्र दिति के व्रत में होने वाले अन्तर को देखने की इच्छा से सर्वदा उपस्थित रहते थे। सौ वर्ष पूरा होने से थोड़े पहले इन्द्र ने एक अन्तर देख लिया ॥३६॥ दिति विना पैर धोये ही शय्या पर बैठ गयी और सो गयी। इन्द्र भी दिति के पेट में प्रवेश कर गये ॥३७॥ वे वज्र को हाथ में लेकर उस महागर्भ को सात टुकड़ों में काट दिए। उस वज्र से पीडित होकर वह गर्भ जोर-जोर से रोने लगा ॥३८॥ इन्द्र ने उससे बार-बार कहा मत रोओ मत रोओ। वह गर्भ सात हो गया उससे इन्द्र पुनः क्रुद्ध हो गये, और उन्होंने शत्रुओं को विर्दीण कर देने वाले वज्र से प्रत्येक के सात-सात टुकड़े कर दिए। उसके कारण वे अत्यन्त वेग सम्पन्न देवता मरुत नाम वाले हो गये ॥४०॥ वज्रपाणि भगवान् इन्द्र ने उन सबों को जो मत रोओ कहा था उसी के कारण उनका नाम मरुत् हुआ। वे उनचास संख्या वाले देवता इन्द्र के सहायक हो गये ॥४१॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के प्रथम अंश के इक्कीसवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥२१॥